लोक सभा चुनाव और एक पूर्व समीक्षा

अगले आम चुनाव को तीन महीने शेष बचे हैं। अनेक पाठक भी जानना चाहते हैं कि क्या करना चाहिये, और मै भी अपना कर्तव्य समझता हूँ कि चुनावों के पूर्व एक समीक्षा प्रस्तुत करूँ। वैसे तो पूरी दुनियां मे ही राजनीति समाज व्यवस्था को प्रभावित करती है, किन्तु भारत की स्थिति तो अन्य देशो की अपेक्षा कुछ इतनी अलग है कि यहॉ राजनीति समाज व्यवस्था को प्रभावित ही नही करती बल्कि संचालित भी करती है। इसलिये हमारा कर्तव्य होता है कि हम भी अपने विचार प्रस्तुत करें।

भारतीय राजनीति मे चार बातें महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं– 1. परिवार केन्द्रित 2. व्यक्ति केन्द्रित 3. दल केन्द्रित 4. विचार धारा केन्द्रित। स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति मे घुमा फिराकर एक ही परिवार का वर्चस्व रहा, जिसने भले ही अपना नाम कांग्रेस रखा हो किन्तु उसमें न कांग्रेस का कुछ लेना देना रहा न किसी व्यक्ति का, और न ही किसी विचार धारा का। सुविधानुसार जब चाहा तब समाजवादी बन गये और जब चाहा तब पूँजीवाद की राह पकड ली और यदि कभी जरूरत पडी तो तानाशाह बनने में भी परहेज नही किया। किन्तु इनकी सारी तिकडम, सत्ता को अपने परिवार तक सीमित करने मे लगी रही। आज दुनिया इतनी आगे निकल गई है, भारत भी अनेक मामलो मे आगे बढा है, राजनीति मे भी अनेक नये–नये प्रयोग हो रहे हैं, किन्तु यह परिवार आज भी सत्ता को अपने परिवार तक सीमित करने मे कोई कसर नही छोड रहा। कांग्रेस को छोडकर अधिंकाश राजनैतिक दल व्यक्तिवादी राजनीति कर रहे हैं, जिनमे एक व्यक्ति ही विचार धारा भी है, राजनैतिक दल भी है और परिवार भी । इनमे जनता दल युनाइटेड तथा संघ संचालित दल को छोडकर बाकी सब दल शामिल है। लालू, मुलायम, मायावती सरीखे सारे दल तो है ही, किन्तु वामपंथी दल भी इससे कही ज्यादा दूर नही हैं। तीसरे प्रकार के वे समूह है जो राजनैतिक दल के रूप मे स्थापित है। इनमे पहले तो जेडीयू तथा भाजपा आते रहे हैं, किन्तु अब भाजपा के समाप्त होकर संघ परिवार के सामने आ जाने के बाद अकेला जेडीयू बचा है, जिसका अस्तित्व भारतीय राजनीति मे न के बराबर बचा हैं। चौथा समूह विचारधारा केन्द्रित है जिसमे संघ परिवार तथा कुछ–कुछ वामपंथियों को भी माना जा सकता है, जो दोनो विपरीत विचाधाराधो पर केन्द्रित हैं। वर्तमान चुनावो मे तो ऐसा दिखता है कि संघ परिवार ने भी मोदी के नाम पर अपना सारा दांव लगा दिया है। यदि विचारधारा के नाम पर हम भारत की सम्पूर्ण राजनीति की समीक्षा करें तो एक तरफ वे दल आते है जो घोषित रूप से तानाशाही के पक्षधर है दूसरी ओर वे दल है जो घोषित रूप से तो लोकतंत्र के पक्षधर है किन्तु है ढुलमुल। संघ परिवार और उनके चेहरे नरेंन्द्र मोदी घोषित रूप से तानाशाही के पक्षधर है क्योंकि संघ परिवार की घोषित नीतियों में केन्द्रित राजनीति सबसे उपर है। साम्यवादी पार्टियां भी नीतिगत रूप से लगभग तानाशाही की पक्षधर है यद्यपि वे भारतीय राजनीति की चर्चा से बाहर हो चुकी हैं। अन्य सभी राजनैतिक दल ढुलमुल विचारधारा के हैं, क्योंकि उनकी कोई घोषित विचारधारा नही है। जेडीयू को थोडा अवश्य भिन्न माना जा सकता हैं ,वह भी अब चर्चा से बाहर ही दिख रही है।

कुछ समय पूर्व तक पूरे देश मे एक निराशा का वातावरण था, कि हमारे समक्ष परिवार और तानाशाही के बीच एक को चुनने की मजबूरी है। दुनिया जानती है कि लोकतंत्र एक असफल सिद्धान्त है जो तानाशाही की जगह मजबूरी मे स्वीकार किया जाता है। किन्तु यदि लोकतंत्र लोकस्वराज्य की दिशा मे न जाये तो वहां अव्यवस्था होना निश्चित है, जैसा की भारत सहित अनेक दक्षिण एशियाई देशो मे स्पष्ट दिख रहा है। स्वतंत्रता के बाद एक परिवार ने अपने स्वार्थवश लोकतंत्र को लोक स्वराज्य की दिशा मे नही बढने दिया। अन्य राजनैतिक दल भी उसी स्वार्थ मे सत्ता परिवर्तन के प्रयत्नो तक सीमित रहे। उन्होंने कभी भी लोकतंत्र को लोकस्वराज्य की दिशा देने की बात नही सोची क्योंकि यह प्रयत्न तो उनके पैरो में कुल्हाडी मारने जैसा होता। लोकतंत्र का जो परिणाम होना था वही हुआ कि भारत अव्यवस्था की दिशा मे बढता चला गया। देश तरक्की किया समाज नीचे गिरते चला गया। भौतिक उन्नति तो बहुत हुई किन्तु चरित्र पतन भी उतनी ही गति से बढता चला गया। एक बार जयप्रकाश जी के प्रयत्नों से आशा की एक किरण दिखी थी किन्तु वह भी सत्ता परिवर्तन तक आकर सिमट गई। दूसरा प्रयत्न अब अन्ना हजारे ने किया था जो न सत्ता परिवर्तन की दिशा मे बढ पाया, न व्यवस्था परिवर्तन की दिशा मे। अब वह प्रयत्न अरविन्द केजरीवाल के नेतृत्व मे

कुछ–कुछ बढ रहा है, पता नही किस दिशा मे जायेगा ? अव्यवस्था का सिर्फ एक ही समाधान होता है और वह है तानाशाही। भारतीय राजनीति की अव्यवस्था से परेशान होकर यहॉ के लोगों ने तानाशाही को भी स्वीकार करने का मन बना लिया है। जिसका स्पष्ट आभाष संघ परिवार और नरेंन्द्र मोदी की तूफानी बाढ मे दिखाई देता है।

यदि लोकतांत्रिक व्यवस्था के आधार पर दलों का ऑकलन करें, तो नीतियॉ बनती है विचारों के आधार पर, और कार्य होता है और संस्कारों के आधार पर। इसका अर्थ यह हुआ कि विधायिका मे अधिक से अधिक विचारवान लोग होने चाहिए भले ही चरित्र का मापदण्ड ऑशिक रूप से कमजोर भी क्यों न हो। दूसरी ओर कार्यपालिका मे ईमानदार लोगों का बहुमत होना चाहिए, अर्थात कार्यपालिका में चरित्र महत्वपूर्ण है, वैचारिक दृष्टि से ऑशिक कमजोरी भी चल सकती है। इस मामलें मे नरेंन्द्र मोदी या संघ परिवार बहुत पीछे है, क्योंकि वे संस्कारों पर जोर देते हैं, जिसका अंतिम परिणाम होता है चरित्र और विधायिका की आवश्यकता है विचार प्रधान लोंगों की। इस मामलें मे साम्यवादियों का भी अलग सोच नही है। संघ परिवार इस संस्कार से जुडा हुआ है कि जो कुछ पुराना है वही अच्छा है जबकि साम्यवाद इस संस्कार मे जुडा हुआ है कि जो कुछ पुराना है वह गलत है। वास्तविकता यह है कि लोकतंत्र में विधायिका को देश, काल, परिस्थिति अनुसार स्वतंत्र विचार करने की आदत डालनी चाहिए। इस मामलें मे राहुल गॉधी की भूमिका सबसे अच्छी है। मैं तो तब से उनका और अधिक प्रशंसक हो गया जब से कॉग्रेंस पार्टी के जिम्मेदार समूह ने जातिगत आरक्षण को समाप्त करने की वकालत शुरू कर दी है। अब तक सिर्फ मुलायम सिंह ने डरते–डरते हल्की सी यह बात कही है, अन्यथा अन्य राजनैतिक दल जिनमें संघ परिवार भी शामिल है, इस बात को समझते हुए भी तथा सहमत होते हुए भी इसके विपरित ही बोलते रहतें हैं। कॉग्रेस पार्टी ने यह खतरा उठाकर एक बहुत अच्छा काम किया है।

कॉग्रेस पार्टी ने राहुल गॉधी के नेतृत्व मे अवश्य ही कुछ–कुछ लोकतंत्र को लोकस्वराज्य की दिशा मे मोडने की बातें शुरू की किन्तु ये बातें बहुत देर से शुरू हुई और दूसरा इस परिवार पर भारत की जनता का अब कोई विश्वास नही रहा। इसलिए ईमानदार प्रयत्न होने के बाद भी भारत की जनता अब इन पर विश्वास नही कर रही। ऐसे समय में व्यवस्था परिवर्तन के नारे को लेकर अरविंद केजरीवाल का अभ्युदय एक आशा की किरण जगाता है। अरविंद केजरीवाल के भी क्रिया–कलाप बिलकुल साफ नही है। उनमें भी व्यक्ति केन्द्रित राजनीति का प्रभाव बढ रहा है। उनमें भी सत्ता परिवर्तन और व्यवस्था परिवर्तन का घालमेल साफ दिखाई देता है किन्तु अब तक अरविन्द केजरीवाल और उनके दल में न तो कोई तानाशाही की अवधारणा दिखी है न कोई परिवार वाद की। इतना अवश्य है कि इस दल की भी कोई विचारधारा स्पष्ट नही है, किन्तु इतना अवश्य है कि या तो वर्तमान लोकतांत्रिक प्रक्रिया ही आगे बढेगी अथवा लोकतंत्र ऑशिक रूप से लोकस्वराज्य की दिशा मे झुकेगा।

चुनावों को सिर्फ दो–तीन महीने ही बचें हैं, अरविन्द केजरीवाल के दल को भी प्रकाश मे आये एक महीना ही बीता है। किन्तु इतना स्पष्ट है कि नरेंन्द्र मोदी और संघ परिवार को महसूस होने लगा है कि जेल में जन्म लेने वाला बालक हो सकता है कृष्ण ही हो। संघ परिवार और नरेंन्द्र मोदी भी इस अकस्मात घटना से चिंतित हैं और अपनी ओर से भरसक प्रयत्न कर रहें हैं। कॉग्रेंस पार्टी की स्थिति सॉप–छछुन्दर की हो गई है। उसे न निगलते बन रहा है न उगलते बन रहा है। उसे अपना पराभव तो निश्चित दिखता है किन्तु वह सोच नही पा रही है कि अरविन्द केजरीवाल के साथ होकर अपनी थेडी–मोडी साख बचा लें या अंन्त तक लडते–लडते शहीद हो जाएं।

कॉंग्रेस पार्टी को यह तो आभाष हो चुका है कि सत्ता में बने रहना असंभव है। कॉग्रेंस पार्टी ने सोचा था कि उसकी चुनाव पूर्व की गई कुछ अच्छी घोषणाएँ उसे जन विश्वास दिला सकेंगी, किन्तु एक तो उसने परिवार केंन्द्रित राजनीति से बाहर निकलने का निर्णय नही किया, दूसरे उसने राहुल गॉधी सरीखे एक संत हृदय राजनीति के अनाडी खिलाडी पर अपना दॉव लगाया और तीसरे उसने परिवार मोह में पडकर मनमोहन सिंह को इस सीमा तक बदनाम कर दिया कि मनमोहन सिंह की असफलता उनके स्वयं के गले की हड्डी बन गई। फिर भी अभी यह परिवार दौड से बाहर होने को तैयार नही है। जिसका अर्थ हुआ कि भले ही हम डूबेगें तो डूबेगें किन्तु हम डूबने के पहले किसी और को आगे क्यों आने दें। चुनाव पूर्व सोनिया गॉधी की अब तक की सारी चालें नाकाम हो चुकी है और अब तो सिर्फ दो–तीन महीने ही बचे हैं। ऐसी स्थिति मे स्पष्ट दिखता है कि लडाई नरेंन्द्र मोदी

बनाम अन्य के बीच ही होने वाली है, जिसके अंतिम परिणाम के रूप मे कुछ भी कहना बहुत जल्दबाजी होगी। स्पष्ट दिखता है कि एक तरफ संघ परिवार और नरेंन्द्र मोदी की जुगलबंदी है तो दूसरी तरफ अनेक स्वार्थी राजनेताओं का संयुक्त समूह। नरेंन्द्र मोदी अभी सबसे आगे दिख रहें हैं जिनकी गति बहुत तेज है, फिर भी वे चुनाव तक कहॉ तक निकल पाएंगें यह पता नही।

फिर भी अब हमारे पास भी इतना समय नही बचा है कि हम अपनी सलाह देने के लिए और अधिक प्रतीक्षा करें। मेरे विचार मे भूलकर भी कॉगेंस पार्टी को वोट देना परिवार वादी गुलामी को स्वीकार करने के अतिरिक्त कुछ नही है। दूसरी ओर नरेंन्द्र मोदी को वोट देना भी कुऍ से निकलकर खाई मे गिरने सरीखे होगा, क्योंकि यदि नरेंन्द्र मोदी के पास समस्याओं का समाधान है तो गुलामी का खतरा भी है। अन्य दलों के पास गुलामी का खतरा तो नही है, किन्तु समस्याओं का समाधान भी नही है। ऐसे समय मे अरविन्द केजरीवाल का व्यक्तित्व अथवा उनका दल ही एकमात्र ऐसा विकल्प दिखता हैं, जिसे वोट देकर आत्म–संतुष्ट हुआ जा सकता है। मैं जानता हूॅ कि अरविन्द केजरीवाल की स्वतः अथवा किसी अन्य को प्रधानमंत्री बनाने की संभावना लगभग नही के बराबर है। मैं यह भी जानता हूॅ कि अरविन्द केजरीवाल को वोट देने का मतलब वोट को समुद्र मे डाल देने जैसा है। किन्तु मेरा यह अवश्य मानना है कि अरविन्द केजरीवाल को दिया गया वोट भविष्य की आत्मग्लानि से अवश्य बचाएगा कि मैं किसी परिवार या किसी तानाशाह का समर्थन करने के पाप मे भागीदार नही हूॅ। अरविन्द केजरीवाल को दिया गया वोट निरर्थक भी हो सकता है और सार्थक भी किन्तु इतना निश्चित है कि वह वर्तमान राजनैतिक दिशा को इसी तरह आगे बढने मे सहायक तो नही होगा। मेरी अरविन्द केजरीवाल जी को भी सलाह है कि वे धीरे–धीरे लोकस्वराज्य की दिशा मे एक–एक कदम बढते हुए दिखे, जिससे हम सब और अधिक विश्वासपूर्वक अपनी बात को कह सकें।

1. जगदीश गॉधी :– सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनउ उत्तर–प्रदेश

प्रश्नः– आप द्वारा प्रेषित पत्र प्राप्त हुआ। इस पत्र मे आपने लिखा है कि शिक्षा का चरित्र से दूर–दूर तक कोई संबंध नही है, बल्कि सच बात तो यह है, कि शिक्षा क्षमता का विकास करती है, चरित्र का नही। इस संबंध मे हमारा आपसे निवेदन है कि मनुष्य की तीन वास्तविकतायें होती है–**1**. मनुष्य एक भौतिक प्राणी है। **2**. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और **3**. मनुष्य एक आध्यात्मिक प्राणी है और यदि मनुष्य की इन तीनो वास्तविकताओं को ध्यान मे रखते हुए, परिवार और स्कूल मे मिली हुई शिक्षा के द्वारा बच्चे का बचपन से ही संतुलित विकास किया जाता है, तो बालक अच्छा, चरित्रवान और विचारवान बनेगा।

हमारा यह भी मानना है कि किसी भी मनुष्य के तीन चरित्र होते है। पहला चरित्र प्रभु प्रदत्त दूसरा माता–पिता के जीन्स, वंशानुकुल से प्राप्त चरित्र तथा तीसरा परिवार स्कूल तथा समाज से मिले वातावरण से विकसित या अर्जित चरित्र। इसमे सबसे अधिक महत्वपूर्ण तीसरे अर्थात अर्जित चरित्र होते है। इस अर्जित चरित्र का निर्माण बालक को परिवार, विद्यालय व समाज मे मिले गुण व अवगुण पर निर्भर करता है। उसे जिस प्रकार की शिक्षा परिवार, विद्यालय तथा समाज से मिलती है, वैसा ही उसका चरित्र भी निर्मित हो जाता है। वास्तव मे मानव जाति का भविष्य इन्हीं तीन क्लास रूमों **1**. परिवार **2**. विद्यालय तथा **3**. समाज मे मिली शिक्षा के द्वारा ही गढा जाता है। इस पत्र के साथ मैं अपना एक लेख ''प्रत्येक बच्चे को सारी मानव जाति की सेवा के लिये तैयार करें '' आपको प्रेषित कर रहा हूॅ। कृपया जनहित मे इस लेख को ज्ञानतत्व के अगले अंक मे प्रकाशित करने की कृपा करें। इस कृपा के लिये हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

उत्तरः–मैं आपसे सहमत हूॅ कि मनुष्य एक भैतिक प्राणी है, एक सामाजिक प्राणी भी है, किन्तु आध्यात्मिक प्राणी है या नही यह स्पष्ट नही है। संभव है कुछ लोग आध्यात्मिक हों तथा कुछ लोग ना हों। समाज तथा परिवार से प्राप्त शिक्षा उसके चरित्र निर्माण मे बहुत सहायक होती है, किन्तु स्कूल से प्राप्त शिक्षा चरित्र पर प्रभाव डालती है, ऐसा स्पष्ट नही है। मेरे विचार से बालक के अन्य माध्यमों से प्राप्त चरित्र स्कुली शिक्षा के द्वारा विकसित होता है। यदि सद्चरित्र की दिशा मे बीजारोपण होगा, तो स्कुली शिक्षा उस अंकुरित बीज का विस्तार करेगी। किन्तु यदि बीजारोपण ही दुष्चरित्र के रूप मे हुआ तो स्कुली शिक्षा उस दुष्चरित्र के बीज को सद्चरित्र मे नही बदल सकेगी। आपने चरित्र के तीन आधार बतायें हैं–**1**. प्रभूप्रदत्त **2**. माता–पिता के

जीन्स से प्राप्त तथा **3.** स्कूल और समाज से प्राप्त। मै प्रभूप्रदत्त चरित्र के पक्ष–विपक्ष मे कहने की स्थिति मे नही हूँ, साथ ही मैं समाज और विद्यालय को एक साथ जोड कर नही देखता। फिर भी आप जैसे विद्वान ने लिखा है, तो मैं इस पर फिर से विचार करूंगा। आपने जो लेख लिखा है, कि प्रत्येक बच्चे को सारी मानव जाति की सेवा करने के लिए तैयार करें–इस लेख से मेरी सहमति है तथा इस लेख मे समीक्षा के लिए कुछ नही है इसलिए यह लेख छापना उचित नही है।

2. ओमप्रकाश मंजुल– पूरनपुर पीलीभीत, उ.प्र.।

प्रश्नः1–आदमी को पतित और नंगा करती मंहगाई :–मंहगाई आज देश की प्रमुख विकराल और ज्वलंत समस्या है। प्रख्यात अर्थशास्त्री रहे, प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह ने भी 3.01.14 की अपनी प्रेस वार्ता मे इसे स्वीकारा है। मंहगाई भ्रष्टाचार का कारण भी होती हे और परिणाम भी। डकैती को छोड भी दे तो चोरी उठाईगीरी राहजनी आदि मंहगाई के ही बच्चे है। देश मे व्याप्त मंहगाई को देखकर प्रथम विश्वयुद्ध 1914–19 के ठीक बाद पैदा हुई महंगाई की याद आ रही है। यूँ वह महंगाई इंग्लैंड, इटली, फ्रांस आदि यूरोप के सभी देशो मे संव्याप्त थी। पर जर्मनी में तूफानी गति से बढ रही मॅहगाई का रूप सर्वाधिक था। वहॉ चाय पीते–पीते चाय की कीमत दो–तीन गुनी हो जाती थी। लोग होटल और रेस्त्रॉ मे, एक साथ ही दो–तीन चाय का आर्डर एक बार मे ही दे देते थे, ताकि इस बीच एक–दो और मित्रों के आ जाने पर बढे हुए अतिरिक्त पैसे न देने पडे। यह वह समय था, जब एक घंटे मे ही फीतों का मूल्य जूतों के मूल्य के बराबर हो जाता था। बढते मुद्रा प्रसार याने मंहगाई का दोधारा दोष यह भी हेाता है कि इसमें निर्धन वर्ग और अधिक निर्धन तथा धनिक वर्ग और अधिक धनी हो जाता है। फलतः धनी और निर्धन के बीच की खाई और अधिक बढ जाती है। इस तथ्य को इस एक ही उदाहरण से समझा जा सकता है–डीजल का मूल्य यदि दो रूपया प्रति लीटर बढता है, तो बस मालिक पूंजीपति आठ रूपये से बढाकर दस रूपये किराया कर देता है। डीजल की बढी कीमत का बहाना बनाकर वह सौ यात्रियो से दो सौ रूपये अतिरिक्त लेता है, जबकि यात्रा मे प्रयुक्त दो लीटर डीजल पर बस मालिक की जेब से केवल चार रूपये ही ज्यादा निकले हैं। इस प्रकार पहले से ही धनी बस मालिक और अधिक मालदार हो जाता है तथा पहले से ही निर्धन यात्री और गरीब हो जाते हैं। ऐसे ही असीम संम्पति से असीम शक्ति पाकर हिटलर, मुसोलिनी और नैपोलियन जैसे तानाशाह पैदा होते है। दूसरी ओर गरीबी मे लाज बचाने के प्रयत्न मे नैतिकता की चादर ऐसी तार–तार हेा जाती है, कि लाज कब चली गयी, पता ही नही चलता। वित्त भर कपडा से ही लज्जाजनक अंग ढॅक जाये तो मीटर भर कपडा क्यों खरीदा जाये ? निर्धन क्रेता चाहे वह आदमी हो या औरत की नियतिजनित यह भी आदत बन जाती है, कि वह विक्रेता के समक्ष बहुत झुक कर और समर्पित होकर पेश आतें हैं भले ही दुकानदार उॅची दुकान पर बैठा दवाई, कपडा, साबुन आदि बेच रहा हो या गली मे चिल्ला–चिल्ला कर आलू, मूली, प्याज बेच रहा हो। धीरे–धीरे निर्लज्जता स्वभाव बनते हुए शान और फैशन का प्रतीक बन जाती है। यही नही अनैतिकता से असम्बद्ध लोगो को पिछडा और पोंगापंथी तथा अनैतिक लोगो को प्रगतिशील एंव उन्नत मानने की प्रवृत्ति पनपने लगती है। नतीजतन समाज मे नंगा नाच प्रदर्शित करने की प्रतियोगिता शुरू हो जाती है। जर्मनी मे यही हुआ–प्रथम महायुद्धोत्तर काल की अनैतिकता का हाल बयां करने वाली स्टेफेन और वेसिंग की कृति की कुछ पक्तियां– ''प्रत्येक लडकी अपनी अशुद्धता की सगर्व गप्प हांकती थी। उस समय बर्लिन के हर विद्यालय मे इसे शान के खिलाफ माना जाता था, कि कोई लडकी सोलह वर्ष की होकर भी अभी तक असंभुक्त है। हर लडकी अपने सम्भोग कर्म को दूसरी की तुलना मे कही अधिक अच्छा और निराला बताने को उत्सुक रहती थी''। आज के औसत भारतीय समाज की नैतिक स्थिति भी इससे अत्यधिक अच्छी नही है। ''रहें घरी चाहे बुने दरी'' को चरितार्थ करने वाले घर–घुस्सू और कूप–मण्डूक भले ही इस बात से सहमत न हों, पर प्रतिदिन रेल, बस और मोटर आदि से सफर करने वाले तथा स्कूल–कालेज के लडके–लडकियों एंव मिलो–कारखानो और कार्यालयों मे कार्य करने वाली किशोरियों को देखने–जानने वाले इस तथ्य से अवश्य सहमत होंगे।

कॉग्रेंस के अन्तिम इन दो क्रमिक कालो मे नून–तेल, लकडीयॉ जैसी जरूरी चीजों तथा नाई, दर्जी ,मोची, रिक्शा, शिक्षा एवं स्वास्थ आदि आवश्यक सेवाओ की कीमतें दस गुना बढकर जिस उंचाई तक पहुंच चुकी है, उसने आम आदमी का जीना

दूभर कर दिया है। चार–पांच हजार रूपया तोला बिकने वाला सोना जो सभी वस्तुओं एंव सेवाओं के मूल्य का मापक है आज तीस–हजारी बन चुका है। इसके बाद मंहगाई की भयावहता का अहसास कराने के लिये कुछ नही बचता ।

2–3 वर्ष पूर्व दिल्ली के रामलीला मैदान मे अन्ना के अनशन पर लाखों लोगों के एकत्रीकरण मे मुख्य भूमिका मंहगाई की ही थी। मजदूर, कृषक, आम आदमी को भ्रष्टाचार या लोकपाल का मतलब न उस समय मालूम था न आज मालूम है, और न ही इससे विशेष मतलब है। पर वही मंहगाई को भली–भॉति जानता है क्योंकि मंहगाई ने उसे बुरी तरह से पीटा है। आम–जन को लगा कि अन्ना की आवाज उसे मंहगाई से निजात दिलायेगी। इसलिये उसने अन्ना की आवाज से आवाज मिलायी थी। हाल के दिल्ली के विधानसभा चुनाव मे भी मंहगाई की अहम भूमिका रही है। यदि केन्द्र सरकार आगामी 4–5 महीनों मे मंहगाई नियंत्रण मे विफल रहती है तो निश्चित रूप से लोकसभा का चुनाव कांग्रेस को काफी मंहगा पडेगा।

उत्तर– ऐसा लगता है कि आप सुनी–सुनाई बातों पर विश्वास करतें हैं जिससे प्रभावित होकर आप मॅहगाई के अस्तित्व को स्वीकारने लगे हैं, जबकि मेरी मान्यता है कि–मॅहगाई के अस्तित्व को स्वीकार करना ही पूरी तरह भ्रमपूर्ण है। यदि दुनिया के करोडों लोगों ने पृथ्वी को चपटी कहकर उसे गोल कहने वाले विद्वान को फॉसी पर चढा दिया, तो क्या पृथ्वी गोल नही हुई ? मैने ज्ञानतत्व–192, 183 तथा 158 मे विभिन्न समयों पर तर्क संगत तरीके से मॅहगाई के अस्तित्व को अस्वीकार किया, जिसमे से एक ज्ञानतत्व 158 का लेख विचारार्थ आपके पास जा रहा है। अन्य स्थानो पर भी कई बार मैनें मॅहगाई के अस्तित्व को अस्वीकार किया है। किन्तु आज तक किसी ने मेरे कथन का तर्क संगत प्रश्नोत्तर नही किया। यह कहना पर्याप्त नही है कि मॅहगाई से सब लोग त्रस्त हैं। यदि सब लोग भूतों से त्रस्त महसूस करने लगे तो मैं क्या कर सकता हूॅ ? आप हर विषय पर गंभीरता से विचार करतें हैं, इसलिए मुझे आपसे उम्मीद है कि आप मेरे तर्कों के विरूद्ध अपने तर्क देगें, जिससे या तो मैं कुछ समझूॅगा या आप कुछ समझेगें। यदि आपके पास मॅहगाई संबंधी प्रकाशित ज्ञानतत्व उपलब्ध नही हों तो आप लिखिएगा मै वे भी आपको भेज दूॅगा। ज्ञानतत्व 158 ,अगस्त 2008 अंक मे प्रकाशित लेख इस प्रकार था।

मंहगाई का भूत–आज पूरे भारत में मॅहगाई सबसे बडी समस्या के रूप में स्थापित हो चुकी है। छोटे से छोटा आदमी भी मंहगाई से परेशानी अनुभव कर रहा है और बडा से बडा आदमी भी। पान दुकान में भी मंहगाई पर ही चर्चा केन्द्रित है और हवाई जहाज में भी। मुझे तो ऐसा कोई मिलता ही नहीं जो मंहगाई से त्रस्त न हों। वैसे तो स्वतंत्र भारत के साठ वर्षो में हमेशा ही मंहगाई से परेशानी अनुभव की गई, किन्तु चुनावों के समय आम आदमी को यह अनुभव और दिनों की अपेक्षा कुछ ज्यादा ही या तो महसूस होने लगता है या महसूस कराने की परंपरा रही है। इस वर्ष भी मंहगाई का एक भूत के रूप में स्थापित होना यह सिद्ध करता हैं कि अवश्य ही आम चुनाव बहुत नजदीक हैं।

मेरे अपने साथी भी मंहगाई से त्रस्त है। कुछ साथी तो बहुत उत्तेजित हो जाते हैं। वे न मंहगाई की परिभाषा करना चाहते है न विरूद्ध में कोई बात सुनना चाहते हैं। बस टी. वी. में बढी मंहगाई का सरकारी ऑकडा सुनते ही उनकी कमर टूटने लगती है और उनका भाषण शुरू हो जाता है। फिर तो वे इस सम्बन्ध में कुछ सुनते ही नही। मुझे मंहगाई के सम्बन्ध मे चर्चा में सुखद आश्चर्य हुआ, जब भारतीय जनता पार्टी के एक प्रमुख व्यक्ति प्यारे लाल जी खंडेलवाल से अस्पताल मे मै मिलने गया और मॅहगाई पर बात छिड गयी । उन्होने स्वंय माना कि यह एक राजनैतिक हथकन्डा के अतिरिक्त कुछ नही होता है। उन्होने इस सम्बन्ध मे और विस्तृत विवेचना की। चुनाव वर्ष मे मंहगाई जैसे संवेदनशील मुद्दे पर संतुलित विवेचना से मेरे मन मे उनके प्रति श्रद्धा भाव ही उत्पन्न हुआ। अन्यथा कॉग्रेंसी कार्यकर्ता तक स्वीकार करता है कि वह मंहगाई से परेशान है।

प्रश्न उठता है कि मंहगाई की परिभाषा क्या है ? मुद्रा स्फीति और मंहगाई में फर्क क्या है ? मैने पूर्व में भी बहुत गहन विचार किया था और अब पुनः गंभीरता से सोचा तो पाया कि मंहगाई एक अस्तित्व हीन शब्द है, जिसका कभी कोई अच्छा या बुरा प्रभाव नही होता। वास्तविक शब्द तो है मुद्रा स्फीति जिसका अर्थ होता है नगद रूपया पर अघोषित कर और

प्रभाव सिर्फ उसी पर होता है, जिसके पास नगद रूपया हो, कल्पना करिये कि किसी व्यक्ति को एक दिन का वेतन सौ रूपया मिलता है, और उसे सौ रूपये मे दस किलो औसत वस्तुएँ प्राप्त होती रहती हैं। कुछ दिनो के बाद उसकी मजदूरी तो एक सौ दस रूपया हो गई और मुद्रा स्फीति बढने के कारण कुल वस्तुएँ दस किलो ही मिली, तो उसे मँहगाई महसूस होने लगती है और उसकी कमर टूटने लगती है, जबकि वेतन वृद्धि और मूल्य वृद्धि किसी मंहगाई के परिणाम न हो कर मुद्रा स्फीति के परिणाम हैं, और मुद्रा स्फीति का तब तक कोई प्रभाव नहीं होता जब तक मूल्यों के अनुपात मे उसका वेतन बढता रहे। इस तरह मंहगाई न कभी आई है न आयेगी, क्योंकि वेतन वृद्वि के अनुपात में मूल्य वृद्वि हमेशा ही कम रही है। स्वतंत्रता के बाद यदि आज तक का ऑकलन करें भी, तो मुद्रा स्फीति करीब सत्तर गुनी बढी है, जबकि मजदूरी डेढ सौ गुनी और कर्मचारियों का वेतन करीब तीन सौ गुना बढा है। इसके बदले मे सोना–चॉदी, जमीन अधिक बढा है। दालें, खाद्यतेल, कृत्रिम उर्जा आदि स्थिर हैं। अनाज, कपडा आदि आवश्यक उपभोक्ता वस्तुएँ सस्ती हुई हैं, और टेलीफोन ,रेडियो, घडी आदि तो कौडियों के भाव बिक रहे हैं। सोचने की बात है कि स्वतंत्रता के बाद ऐसी कौन सी वस्तुएँ मंहगी हुई जिनसे आम लोगो की कमर टूट गई। खाद्य पदार्थ और कपडा तो सस्ता हुआ है और सोना–चॉदी, जमीन मंहगी होने से किसी आम आदमी की कमर टूटती नही। फिर इतना हल्ला क्यों ? हल्ला इसलिए नही होता है कि मंहगाई से जन–जीवन पर बहुत व्यापक प्रभाव पडा है। हल्ला तो इस बात का होता है कि व्यक्ति को आज जो सुविधा प्राप्त थी, उसमे कोई कटौती हो रही है। यदि दस वर्ष पहले फोन का चार्ज दस रूपये था और आज एक रूपया है तो ठीक है। यदि कल दो रूपया हो जाय तो फोन भी मँहगा घोषित हो जायगा और मंहगाई मे शामिल हो जायगा। मैं तो साठ वर्ष पूर्व भी मंहगाई का ऐसा ही प्रचार और हल्ला सुनता था और आज भी वैसा ही है। मुझे तो हल्ले मे कभी फर्क नही दिखा। फिर भी इस बार की मंहगाई का कुछ अलग प्रभाव है। इस बार ऐसी वस्तुएँ मंहगी हुई हैं, जो आम आदमी के उपयोग की हैं जैस–अनाज, दाल ,खाद्यतेल आदि। किसी वस्तु के मंहगा होने के चार कारण हो सकते हैं–**1**. मुद्रास्फीति बढे **2**.– वस्तु का उत्पादन कम हो **3**.– वस्तु का निर्यात अधिक हो **4**.– वस्तु का उपयोग अधिक होने लगे। मुद्रास्फीति का प्रभाव होता नही क्योंकि आम तौर पर मुद्रा स्फीति की तुलना मे वेतन भी अधिक बढता रहा है और श्रम मूल्य भी। जो लोग कहते है कि आज वस्तुओं के मूल्य बढे हैं, और वेतन छः माह बाद बढेगा तब तक तो उस आदमी का कचूमर ही निकल जायगा। वे बिल्कुल झूठ बोलते हैं, क्योंकि यह कैसे माना गया कि वेतन पहले बढा कि मूल्य। यदि मैं कहूँ कि छः माह पूर्व वेतन बढा और आज मूल्य तो इस में गलत क्या है। अन्डा पहले कि मुर्गी यह विवाद न कभी सुलझा है न कभी सुलझेगा। सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि भारत की कुल विकास दर नौ प्रतिशत है, जो सम्पन्नों की सत्रह प्रतिशत और बिल्कुल गरीबों की एक प्रतिशत करीब है। यदि मुद्रा स्फीति के प्रभाव से गरीब आदमी को आज ग्यारह प्रतिशत सामान कम मिल रहा है, तो विकास दर का उस व्यक्ति पर कितना प्रभाव पडता है ? अर्थात वह गरीब आदमी ग्यारह प्रतिशत मंहगाई के बाद भी विकास कर रहा है या उसका जीवन स्तर ग्यारह मे एक घटकर दस प्रतिशत नीचे जा रहा है।

यदि हम वस्तु के उत्पादन की कमी की बात करें तो जिन वस्तुओं की भारी मूल्य वृद्वि हुई है उनके उत्पादन में कोई विशेष कमी नहीं आई है। यदि हम मॉग वृद्वि और क्रय वृद्वि की सोचें तो गेहूँ–चावल, दाल, खाद्यतेल की मॉग वृद्वि या क्रय बढने से कोई संम्बन्ध नही। सीमेंन्ट और लोहा का इससे आंशिंक संबध है। यदि हम आयात निर्यात पर गंभीरता से विचार करें तो मंहगाई का सारा खेल इसी पर निर्भर है। सरकार कठपुतली के समान आयात निर्यात को नचाती रहती है, जिसका प्रभाव मूल्यों पर पडता हैं। सरकार साम्यवादियों को नाराज नहीं करना चाहती और साम्यवादी खाडी देशो के हितो की भारत में लम्बे समय से देखभाल करते रहें है। भारत में डीजल पेट्रोल के मूल्य न बढे, इन सबकी खपत कम न हो, इन सबका आयात भी कम न हो इसकी सर्वाधिक चिन्ता ये बिचारे वर्षों से पूरी ईमानदारी से करते रहे हैं। इस कार्य के लिए तो ये लोग सरकार तक को कुर्बान करने के लिये तैयार रहते हैं, और आप रोज–रोज का विवाद सुन भी रहें होगें कि बिजली की उपलब्धता बढने से होने वाले डीजल पेट्रोल के दुष्प्रभाव के लिए बेचारे कितना संघर्ष कर रहें हैं। यह कोई साधारण संघर्ष नही है। अब आप विचार करिये कि यदि डीजल पेट्रोल की खपत कम नही करनी है, तो आयात करना ही होगा और उसी मुताबिक दुगने–चौगुने मुँह मॉगे दाम भी उन्हें चुकाने होगें और उसके लिए आवश्यक वस्तुओं का निर्यात भी करना होगा। भले ही भारतीय जनता पर

उसका कुछ भी और कितना भी प्रभाव क्यों न पडता हो। यही और सिर्फ यही एक मात्र कारण है, जिसके कारण इस बार कुछ आवश्यक वस्तुओ के दाम इस तरह बढे हैं। साम्यवादी इस सहायता के लिए खाडी देशो से धन लेते हैं या नहीं यह बात तो नही मालूम किन्तु अन्य दलो को इस तेल के खेल से धन मिलना अब कोई छिपी बात नहीं। इस तरह धन के मामले मे तो सबकी सहानुभूति खाडी देशो के साथ रहती ही है और बदनाम बिचारे अकेले वामपंथी रहते हैं क्योंकि खाडी देशो को अमेरिका के विरूद्ध खडा रखना भी तो आसान काम नहीं हैं।

मेरे विश्लेषण अनुसार मंहगाई का कोई अस्तित्व न होते हुए भी कॉग्रेस पार्टी उसका विरोध नही कर पा रही, क्योंकि उसने ही तो सिर्फ प्याज और टमाटर की मंहगाई को मुद्दा बनाकर चुनाव जीत लिया था। अब यदि यह मुद्दा उसके विरूद्ध जा रहा है, तो वह किस मुँह से वास्तविक तर्क समाज के समक्ष रखे और कौन उस बात को सुनेगा ? कुछ आवश्यक वस्तुओ की मूल्य वृद्धि का दोष भी कॉग्रेस आयात–निर्यात की अपनी नीति को नही दे सकती, क्योंकि उसे भी चुनाव लडना हैं और यह आयात–निर्यात ही तो उसके लिए जर्सी गाय का काम करती है ।

सरकारी कर्मचारी यह पोल खोलने को तैयार नही क्योंकि मंहगाई का प्रचार उन्हें कई गुना अधिक वेतन बढवाने मे सहायक होता है। अन्य अनेक पत्रकार या सामाजिक कार्यकर्ता इस असत्य को ही सत्य मान बैठे हैं। उन्हें न मंहगाई का पता है न तेल के खेल से कुछ लेना देना है। जो हल्ला समाज मे उठ रहा है उसके साथ अपने को जोड लेना उनकी मजबूरी है। मैं चाहता हूँ कि मॅहगाई के मुद्दे पर समाज में व्यापक विचार मंथन हो और सच समाज के समक्ष प्रकट हो।

प्रश्नः 2– आप का क्या होगा जनाब–ए–आली :– प्राकृतिक नियम है कि जो चीज जल्द बनती है वह उतनी ही जल्द बिगड भी जाती है। बुलबुला झण भर मे मिट जाता है, जबकि पत्थर के बनने और बिगडने मे सदियॉ लग जाती है। कोई झांसाराम बहुत दिनो तक आसाराम नही बना रह सकता। ''उघरहिं अंत न होई निबाहू–कालनेमि जिमि रावन राहू'' के अनुसार निश्चित समय आने पर पाखंड खंडित हो ही जाता है और ढोंग की पोल खुल ही जाती है। आम आदमी पार्टी के बारे मे भी धारणा बनाने मे जल्दवाजी नही करनी चाहिये। इसे दिल्ली–प्रदेश की सत्ता मे आये अभी जुमा–जुमा चार दिन भी नही हो पाये है और अभी से इसकी कलई खुलने लगी है। अन्ना द्वारा उछाले गये अति सामयिक भ्रष्टाचार के मुददे को अपना हथियार बनाकर केजरीवाल ने सफलता प्राप्त की उन्ही का मजाक उडाते हुए उसने कहा–यह तो अन्ना का जोकपाल है। भंयकर मंहगाई आदि के कारण तत्कालीन वर्तमान सरकार के प्रति असंतोष, नये प्रत्याशी को आजमाने की उत्कंठा तथा विदेशो मे जमा काला धन लाने व सत्ता मे आने पर कांग्रेसियों को तत्काल जेल भेजने जैसे लोक–लुभावन वादों–दावों के कंधो पर सवार होकर केजरीवाल सिंहासन तक पहुंचे। जिस कांग्रेस को यह भ्रष्ट कहते नही थके और जिसकी कब्र पर महल खडा किया उसी से गलबहियॉ करके इन्हे अब भ्रष्टाचार पर उपदेश देना शोभा नही देता। रही बात वादे निभाने की तो कोई भी वादा ऐसा नही है जिसके गडढे को भरने के लिये पास की जमीन न खोदी जाये। वैसे भी क्या शीला को जेल भेजने के वारंट पर यह शीला के ही हस्ताक्षर करवा लेंगे। शायद ऐसा हास्यापद एवं मूर्खतापूर्ण गठबंधन संसार मे दूसरा न होगा। वस्तुतः यह गठबंधन नही ठग–बंधन है जिसका एक ठग सत्ता का भूखा था और दूसरा ठग रक्षा का। अब तो केजरी और कांग्रेंस को चोर–चोर मौसेरे भाई कहना चाहिये। वैसे भी जब तक बेइमानी करने का मौका नही मिलता तब तक हर बेईमान ईमानदार ही होता है। रामलीला मैदान मे शपथ की नौटंकी करना, उसके लिये मेट्रो से आना ये सब ढोंग थे। रामलीला मैदान मे ही यदि इस प्रकार के ड्रामे होने लगे, तो संसद और विधान मंडलो की क्या उपयोगिता रह जायेगी। रामलीला मैदान मे नाटक करने वाला क्या हर आदमी अच्छा होता है, और लोकसभा एंव विधान सभा मे शपथ लेने वाला हर व्यक्ति बुरा ? केजरी के नेतृत्व मे प्रदर्शित सादगी का ढोंग अब भी बदस्तूर जारी है। इसी के कारण पहले केजरीवाल भगवान दास रोड स्थित 10 बडे रूम वाले जिस भव्य आलीशान फ्लैट मे रहने जा रहे थे, उसे छोडकर उनने अब नई दिल्ली के किसी छोटे फ्लैट मे रहने की तैयारी की है। पूर्व निश्चित फ्लैट सुप्रीम कोर्ट के जजों एवं केंन्द्रिय मंत्रियों के फ्लैटों से भी बडा था। टोपी पहनकर प्रशासनिक कार्य संम्पन्न करना भी बचकानी मानसिकता का प्रतीक है। वह भी ऐसी जोकर ब्रान्ड टोपी है जो ना सीधी है और ना ही गोल। टोपी को सांगठनिक कार्यक्रमों

में तो पहना जा सकता है, पर विधानसभा के कार्यकलापों मे पहनना मर्यादा का उल्लंखन है। मजमा जमाना कोई बडी बात नही है, जादूगर और बाजीगर इसे रोज करते हैं, पर शासन करना बहुत कठिन है। बजर–बट्टू से रूपया बनाने वाला बाजीगर वास्तव मे रूपया बना लेता तो जगह–जगह भीख क्यों मॉगता ? यह तो बस उसका ढोंग होता है। फिलहाल तो ऐसा ही लगता है कि मुख्यमंत्री की भारी सीट पर कोई हल्का आदमी भाग्य की बदौलत बैठ गया।

इनकी सबसे बडी झॉसें वाली बात यही है कि ये आम आदमी की बात करतें हैं, जबकि इनमे से तो कोई आम–आदमी नही है। दिल्ली मे भी अधिकतर आम आदमी नही रहते। आम आदमी भारत के आठ लाख गॉवों में रहता है जिसे आज की तारीख मे भी रोटी, कपडा और मकान के लाले पडे हुएं हैं। इन्होनें पार्टी के नामकरण के द्वारा भी लोगों को मूर्ख बनाया है। आप (AAP) आम आदमी पार्टी का संक्षिप्त अंग्रेंजीकरण है। इसका हिन्दीकरण भाजपा, माकपा, बसपा, सपा, की तरह ''आ–आ–पा होना चाहिए। आप मे अंग्रेंजियत याने परराष्ट्रवादिता की बू है। इतना ही नही कश्मीर मे जनमत संग्रह करने की बात कहकर आपने इससे भी आगे जाकर अराष्ट्रवादिता याने राष्ट्रद्रोह का कार्य कर डाला। कश्मीर जैसे संवेदनशील और गंभीर मुद्दे पर आपको क्षमा नही किया जा सकता है। यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि राष्ट्रवादिता के मामले मे जो भी यहॉ नया आता है, वह घाघ होता है और पुराने का बाप निकलता है। एक सॉपनाथ होता है तो दूसरा नागनाथ। अभी तो वह ढंग से कुर्सी पर बैठ भी नही पायें हैं, और इतने एक्सपर्ट क्वालिटी का तुष्टीकरण शुरू कर दिया है। केजरीवाल ने इसी नीति और नीयत के तहत अभी बरेली की आला हजरत की मजार पर चादरपोशी भी कराई है। इतना ही नही केजरीवाल चुनाव से पूर्व बरेली मे एक मुस्लिम नेता से मिले थे जो बरेली मे 2012 के दंगा का प्रमुख माना जाता है तथा जिसके कारण दंगा मे लोग भी मारे गये। अरबों–खरबों की संम्पति स्वाहा हुई तथा 22 दिन तक वहॉ के घरों मे चूल्हे नही जले थे।

सबसे अहम बात यह है कि आप की कोई सॉस्कृतिक विचारधारा नही है। यह केवल पेट को महत्व देती है, आत्मा को नही। समाज, मानवता के उन्नयन हेतु इसके पास कोई कार्यक्रम नही है। अस्तु तय है कि इससे केवल साम्यवादी दलों को ही खतरा है, अन्य दलों को नही या न के बराबर। पर अभी तो यही देखना है कि आगे क्या–क्या होता है।

उत्तरः–आपके विषय मे हम लोगों के बीच मे यह धारणा बनी हुई है, कि आप ऑशिक रूप से ही किसी ओर झुक सकतें हैं, एकपक्षीय रूप से तर्कहीन तरीके से नही। आपके अरविंद केजरीवाल संबंधी लेख ने मेरी इस धारणा को तोडा है। तीन लोग प्रत्यक्ष रूप से प्रधानमंत्री की दौड मे दौड रहें हैं। जिसमें सबसे आगे तो नरेंन्द्र मोदी ही हैं, दूसरे नम्बर पर कभी राहुल गॉधी दिखने लग जातें हैं, कभी अरविंद केजरीवाल। आपने जिस तरह अरविंद केजरीवाल की आलोचना की है, उससे संदेह होता है कि आप नरेंन्द्र मोदी के प्रशंसक हैं। किसी का प्रशंसक होना कोई बुरी बात नही है किन्तु प्रशंसक होने का यह मतलब नही है, कि दूसरे पक्ष की आलोचना मे विरोध झलकने लगे। अपनी पहचान तटस्थ समीक्षा की दृष्टि मे आठ आधारों पर बनती है। या तो आप तटस्थ समीक्षक हों या प्रशंसक–समर्थक, सहयोगी–सहभागी, दूसरी ओर समीक्षक के बाद आलोचक–निंदक, विरोधी और शत्रु तक बढा जा सकता है। अब तक मैंनें आपको समीक्षक से बढकर या तो मोदी जी का प्रशंसक की सीमा तक बॉधा था या शेष दोनो के अर्थात अरविंद केजरीवाल तथा राहुल गॉधी के आलोचक तक। किन्तु इस लेख के द्वारा आपने सीमाऍ तोडकर अरविंद केजरीवाल की एक पक्षीय निंदा –जो बढते–बढते विरोध तक चली गई है दिखी। हमें इस प्रकार के विचारों से कोई एलर्जी नही है, लेकिन हमें यह तय करना पडता है, कि हमें किस भाषा मे उत्तर देना है, यही कारण है कि मैं आपके इस प्रश्न का उत्तर नही दे रहा हूॅ।

स्पष्ट घोषित है कि मैं लोकस्वराज्य और तानाशाही के बीच किसी भी सीमा तक लोकस्वराज्य के पक्ष मे जा सकता हूॅ। यही कारण है कि मैं अन्ना जी के समर्थन मे खडा दिखता हूॅ। मैंनें अब तक अरविंद केजरीवाल मे लोकस्वराज्य के प्रति साफ–साफ दृष्टिकोण नही देखा है। फिर भी मैंनें इतना अवश्य देखा है कि नरेंन्द्र मोदी मे तानाशाही स्पष्ट झलकती है। 2014 के चुनावों मे कॉग्रेंस पार्टी को तो वोट देने का अर्थ ही नही है क्योंकि उसे वोट देना तो एक परिवार की गुलामी पर मुहर लगाना है। मैं तो यहॉ तक मानता हूॅ कि यदि भगवान भी नेहरू परिवार मे जन्म ले लें तो उनको भी प्रधानमंत्री बनाना गुलामी ही माना जाएगा। इसलिए

तीनो उम्मीदवारों मे से राहुल गॉधी का सर्वाधिक प्रशंसक होने के बाद भी मैं उन्हें प्रधानमंत्री बनाने के एकपक्षीय विरोध मे हूॅ। नरेंन्द्र मोदी मे समस्याओं की समाधान की अद्भूत क्षमता है और यदि अरविंद केजरीवाल लोकस्वराज्य की दिशा मे साफ–साफ नही बढते हैं, तो वर्तमान चुनाव मे भगवान भरोसे छोडने के अलावा मेरे पास कोई उपाय नही है। अब भी मुख्यमंत्री बनने के बाद अनेक गलतियॉ करने के बाद भी मुझे अरविंद केजरीवाल के अतिरिक्त किसी अन्य में कोई उम्मीद नही दिखी, जो ऑशिक रूप से भी, स्वराज्य की चर्चा करे। मैं आपसे चाहता हूॅ कि आप तर्कों के आधार पर अपनी बात रखने की अपनी छवि को बनायें रखें।

3. वासुदेव यादव एडवोकेट–व्यवहार न्यायालय देवरिया उ.प्र.।

प्रश्नः–आप द्वारा प्रेषित पत्र प्राप्त हुआ। आपके द्वारा भेजा जा रहा ज्ञानतत्व बराबर मिलता है, और मिलने के तुरन्त बाद सब काम छोडकर ज्ञानतत्व को पढतें हैं। आपके द्वारा चलाया जा रहा अभियान बहुत सराहनीय है तथा उसमें जो चर्चायें आती हैं, वह भी अच्छे विद्वानों द्वारा लिखा गया होता है। एक बात जरूर मेरे मन मे पैदा होती है कि जहॉ देश मे इतना भ्रष्टाचार फैला हुआ है, अपराधी जगह–जगह हावी है और सत्ता में बना हुऍ है, जिसको जेल मे होना चाहिए वह पुलिस अभिरक्षा मे घूम रहा है। किसान, गरीब, देश के नौजवान मारे–मारे फिर रहें हैं, उनके लिए उनकी सरकार कब आयेगी ? वे कैसे लोग होंगें जिन्हें सत्ता प्राप्ति के पहले चिन्हित नही किया जा सकता ? आप उत्तर–प्रदेश सरकार के संबंध मे ज्ञानतत्व मे कभी टिप्पणी नही करते, जहॉ पर विकास ठहर सा गया है। एक मात्र चीनी उद्योग समाप्त होने के कगार पर है। यहॉ के नेता जातिवाद फैलाकर सत्ता को आसानी से प्राप्त कर रहें हैं। क्या इनके विरूद्ध कोई अभियान चलेगा ?

उत्तरः– एक ओर तो आपने विकास की चर्चा की है, दूसरी ओर अपनी सरकार की चर्चा की है। यदि सरकार विकास करेगी तो शासक और शासित के बीच की दूरी बढेगी ही। सरकारों का काम विकास करना नही होता बल्कि ऐसी परस्थितियॉ पैदा करना है जिसमे सब लोग स्वतंत्रता पूर्वक अपनी–अपनी क्षमतानुसार विकास कर सके। सरकार किसी की ऐसी स्वतंत्रता मे न बाधा पैदा कर सकती है न किसी की सहायता। आपने उत्तर–प्रदेश सरकार की समीक्षा चाही है तो आप बताइये कि मैं उत्तर–प्रदेश सरकार की, झारखण्ड की तुलना मे आलोचना करूॅ अथवा बंगाल की अथवा तमिलनाडू की या और किसी की। मैं ये नही कर पाता हूॅ कि कौन प्रशंसा करने योग्य है और कौन आलोचना करने योग्य। मनमोहन सिंह ने लीक से हटकर कुछ स्वतंत्रता देने की पहल की तो मनमोहन सिंह की दुर्गति आप देख रहें हैं। नीतिश कुमार ने बिहार मे कुछ अच्छी पहल की तो उनका भी हाल आप देख रहें हैं। नरेंन्द्र मोदी ने तानाशाही तरीके से समस्याओं का समाधान किया तो वे प्रधानमंत्री पद के निकट पहुॅच गए हैं। ऐसे स्थिति मे सिर्फ उत्तर–प्रदेश की बात करना मेरे लिए कितना उचित होगा।

4. के विटठल राव– मैसूर कर्नाटक।

प्रश्न– आपकी पत्रिका ज्ञान तत्व 282 प्राप्त हुआ। ज्ञान तत्व मे प्रकाशित– ''राजनीति मे राहुल गांधी'' लेख पढा। प्रस्तुत राजनीति की हालत मे आपने एक प्रभाव पूर्ण लेख लिखकर कलम रूपी तलवार से आम जनता पर वार किया है। ऐसा निर्भय लेख किसी प्रांतीय भाषा की पत्रिका या अंग्रेजी पत्रिकाओ मे देखा नही। इसलिये इस लेख को कर्नाटक राज्य की भाषा मे अनुवाद करना चाहता हूॅ। अगर आपकी अनुमति हो तो ऐसा कर सकता हूॅ। इस कारण से आपसे प्रार्थना करता हूॅ कि आप अनुवाद करने की अनुमति देने का कष्ट करे।

उत्तर– ज्ञान तत्व मे जो भी मेरे विचार प्रकाशित होते हैं, वे मेरी धरोहर नही है, बल्कि संम्पूर्ण समाज मे विचार मंथन के लिये है। यदि कोई व्यक्ति उनसे सहमत या असहमत होकर उन विचारो को कहीं पुनः प्रकाशित करना चाहता है, तो मुझे खुशी होगी। यहां

तक कि कोई व्यक्ति उन विचारो को अपने नाम से भी प्रचारित करना चाहे तो मेरे लिये किसी प्रकार के कष्ट, आपत्ति अथवा अनुमति की कोई आवश्यकता नही है। यदि मेरे नाम से प्रकाशित हो तब तो कोई प्रश्न ही नही है।

आपको मालूम ही होगा कि मै एक विचारक हूँ जिसे प्रचार से अधिकतम दूरी बनाकर रखनी चाहिये, क्योंकि प्रचार–विचार विस्तार में सहायक होता है, विचार मंथन मे बाधक। मै पांच वर्ष दिल्ली मे रहा, मेरी प्रसिद्धि बढी किन्तु चिंतन की क्षमता घटी। मैनें इसे सामाजिक क्षति माना और मैंने साथियों के रोकने के बाद भी दिल्ली से वापस लौटना उचित समझा। कुछ साथियों को मेरा यह निर्णय गलत भी लग सकता है, किन्तु मैं समझता हूँ कि मेरा निर्णय सही था।

अंत में मैं अनुमति के साथ–साथ यह निवेदन करता हूँ, कि आप उक्त लेख अथवा ऐसे किसी विचार को पुनः प्रसारित करें।

5. बंसन्ती लाल सरूपरिया– एडवोकेट राजसमंद राजस्थान।

प्रश्नः–आपके द्वारा जारी की गई विज्ञप्ति श्री राहुल जी एंव श्रद्धेय श्री मोदी जी के संबंध मे दी है। यह एकदम सही है। भगवान ने चाहा तो सन 2014 मे अगर भारत वर्ष का प्रधान मंत्री श्रद्धेय मोदी जी बनते हैं, तो पूरे भारत वर्ष को लाभ मिलेगा क्योकि इतने लम्बे समय से देश मे ऐसा कोई आदमी नही आया जो भारत वर्ष को चला सके। मैने उन्हें एक पत्र लिखा था। उसकी एक प्रति पत्र के साथ संलग्न कर भेज रहा हूँ। कृपया अवलोकन करके आने वाले समय मे श्री मोदी जी का व्यवहार अच्छा रहेगा या नही इस बात का जबाब अवश्य भेजें।

मोदी जी द्वारा दिनांक 15/8/2013 को दिये गये भाषण से मुग्ध होकर, यह पत्र लिखने के लिये मुझे अपने विचार व्यक्त करने के लिये विवश होना पडा।

टी. वी. पर मैने अपने परिवार के सभी सदस्यो के साथ मोदी जी का पूरा भाषण सुना। उस भाषण से यह सार निकला कि वर्तमान परिस्थितियों मे ऐसे व्यक्ति की भारत को सख्त जरूरत है और ऐसे व्यक्ति ही देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर सकते हैं। भाषण के दौरान उन्होनें राजनैतिक, आर्थिक और औद्योगिक नीतियों पर जो बाते रखीं, उनकी आज की देश की परिस्थितियो को देखते हुए उन जैसे प्रधान मंत्री के रूप मे जनता को मिलना अति आवश्यक है। सबसे आश्चर्यजनक बात यह रही कि उनके भाषण को सुनने के लिये पब्लिक के लिये टिकट की व्यवस्था की गयी थी। भारत देश के लिये ऐसा व्यक्ति विरला ही पहली बार भारत में हुआ है। मोदी जी को भाजपा का प्रधानमंत्री उम्मीदवार घोषित करना एक सौभाग्य की बात है। हरियाणा की वीर धरा रेवाडी मे राजग के प्रधान मंत्री पद के प्रत्याशी श्री नरेन्द्र मोदी की हुई रैली मे पूर्व सैन्य अधिकारी, पूर्व सेना कर्मचारी व लाखों लोगों की भीड जुटने से राष्ट्र स्वाभिमान की स्पष्ट झलक दिखाई दी। जिस तरह जनता ने भारत माता की जय व मोदी जिंदाबाद के नारे लगाये उससे साफ हो गया कि मौजूदा केन्द्र व प्रदेश सरकार की गलत नीतियों से आहत लोग बदलाव का मन बना चुके हैं और सशक्त नेतृत्व के हाथो देश की बागडोर सौंपना चाहते है। यह रैली एक ऐतिहासिक रैली थी। भाजपा के पी एम पद के उम्मीदवार घोषित होने के बाद मोदी जी की दिल्ली मे जो रैली हुई उसमें जनता अपनी श्रद्धा से आयी थी, न की भाडे पर जनता इकट्ठी की गयी। इस अपार जन समूह विशेषकर युवा शक्ति को देखते हुए आज उन जैसे प्रधानमंत्री की भारत देश को आवश्यकता है, जो वे हासिल करके रहेंगे। आज प्रत्येक नागरिक को उन पर नाज है, कि उन जैसे विद्धान, सुभाषी, राष्ट्र प्रेमी के रूप मे पदासीन हो यही जन आकांक्षा है। उन्होनें कहा कि ''मै शासक नही मुझे तो सेवक के रूप मे काम करना है'' यह कितना बडा सोच है जो उन्होनें प्रकट किया ।

उन्होंनें अपने संबोधन मे व्यक्त किया था कि मनमोहन जी को बोलने की आदत नही रही है। वे भूल गये कि क्या और कैसे बोलना है। यह युक्ति बिल्कुल चरित्रार्थ हुई कि उन्होंने नवाज शरीफ के सामने आम बातो के अलावा और कुछ नही कहा। उनका आत्म विश्वास इतना तगडा है कि अच्छे–अच्छो को नत मस्तक होना पडता है। मोदी जी के प्रधानमंत्री उम्मीद वार के नाम

पर जब श्री राजनाथ सिंह जी ने मोहर लगाई, उस वक्त पूरे भारत वर्ष मे लोग भाव विभोर हो उठे। सबकी जन आकांक्षाओ की पूर्ति हो गई, इसका सबूत दिल्ली के अंदर जो जनता इकट्ठी हुई थी, उस जनता ने टिकट खरीद कर मोदी जी का भाषण सुना और उस भाषण के दौरान जनता ने दिल्ली के अंदर जो सराहना की वह दृश्य सभी टी.वी. चैनलों पर देखा गया और श्रद्धेय मोदी जी की प्रशंसा लाखो लोगों द्वारा की गयी। मोदी जी प्रधानमंत्री के पद पर पदासीन होवे, यही हमारी अंतरात्मा की आवाज है।

उत्तरः—आपने सच ही लिखा है कि भारत की जनता विशेषकर उत्तर भारत की जनता का बहुमत मोदी जी के पक्ष मे है। भावनात्मक रूप से मोदी जी के भाषण ने आम जनता को आकर्षित भी किया है और उत्साहित भी। विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या भीड का समर्थन अथवा भाषण की कला उचित—अनुचित का एकमात्र पैमाना होगा ? कुछ दिनों पहले आशाराम बापू का जादू छाया हुआ था। अब भी बहुत लोग उस मोहपाश से नही उबर पायें हैं। कुछ माह पहले तक तो बाबा रामदेव अथवा निर्मल बाबा भी भगवान से कम नही माने जाते थे, किन्तु आज उनका आकर्षण बहुत घट गया है। कुछ माह पूर्व तक अन्ना हजारे के पीछे भारत ही नही, सारी दुनिया पागलता की सीमा तक आगे बढ रही थी। आज किसी प्रकार की गलती ना करने के बाद भी उनके साथ चलने वाला एक भी साथी दिखाई नही देता। आप यदि नरेंन्द्र मोदी से इतने सम्मोहित हैं, तो यह आपका व्यक्तिगत विषय है, मेरा नही। अब तक नरेंन्द्र मोदी ने अपनी क्षमता तो प्रमाणित की है, किन्तु नीयत का कोई प्रमाण सिद्ध नही किया है, बल्कि उनके आचरण से उनकी नीयत पर कुछ—कुछ संदेह ही होता है। इतिहास बताता है कि हिटलर के पीछे भी जर्मनी इसी प्रकार पागल हुआ जा रहा था, किन्तु परिणाम हमने देखा कि वह पागलपन उसे किस सीमा तक ले गया। मेरा सुझाव है कि आप नरेंन्द्र मोदी को भारत भाग्य विधाता भलें ही मान लें किन्तु मुझ जैसे व्यक्ति को अपना स्वतंत्र निष्कर्ष निकालनें दें। वैसे इसी अंक में एक लेख लिखकर मैंनें आपके प्रश्न का विस्तार से उत्तर दिया है।

6. शिवदत्त बाघा— बॉदा उत्तर—प्रदेश।

प्रश्नः—दुनिया उलझी हुई है या उलझाई गई है। दुनियॉ बॅटी हुई है या बॉटी गई है—इन्हीं दो बातों को लेकर वादों—विवादों के अनेकानेक संस्करण सामने है। वाद—विवाद है, प्रश्न है, असल मुददे गायब हैं। ''जिमि पाखण्ड विवाद से लुप्त होंहिं सदग्रन्थ'' अर्थ यह है कि सत्य गायब है। भौतिक जगत का भौतिक सत्य है सत्ता, शासन, सरकार। शासन का उदेश्य क्या है ? इन उदेश्यों की प्राप्ति के लिए उसने कौन से मूल्य तय कियें हैं। सत्ता के संन्दर्भ मे ये दो बातें ही महत्वपूर्ण है, शेष बकवास जान पडती है। विद्वत समाज अपना विद्वता का कीमती समय इन्हीं मिथ्या बातों मे जाया कर रहा है, फिर इस धरती को इन्सानों के रहने लायक बनाने की कोई राह बनती नही दिख रही। सरकारों, सत्ता, शासन का भी एक मात्र उदेश्य यही था कि वह धरती को इन्सानों के रहने लायक बनानें मे मानव जाति का सहयोग करे, संरक्षण करें। पर दुनिया की सारी हुकुमतें उल्टी दिशा मे चल निकली जिससे बहसों को जन्म मिला। इस पाखण्डपूर्ण बहस व आचरण में वह बेचारा व्यक्ति अथवा मानुष जो सारी धारणाओं, विचारों के केन्द्र मे था, कल भी बेचारा था और आज भी बेचारा है। इस प्रकार बेचारे बनाये गये लोगो की सीढी ही सत्ता प्रेमियों को सत्ता तक पहुंचाने मे मददगार साबित होगी। अर्थ यह है कि इन बेचारों के कंधो पर सवार होकर सत्ता तक पहुंचा जायेगा और अपनी हसरतो को पूरा किया जायगा। इन्ही बेचारों के भरोसे इन्ही के नाम जनतंत्र से वह सब कुछ हासिल होगा, जो सत्ता मंडली को चाहिये होगा। ''गधो पर बोझ ढोते है शेरो पर नही''। इसी संदर्भ मे एक बात और भी कहना चाहूगा कि सूरज निकलने से पहले उसके निकलने का आभाष होने लगता है। इसी प्रकार किसी के नेक इरादो की झलक उनके सामने आने से पहले ही दिखाई देने लगती है। हम अपने देश की व्यवस्था के अब तक के सफर मे नेक—नीयती की झलक का अभाव ही देख रहे हैं। जैसी भटकाव की स्थिति अपनी व्यवस्था के सामने है और जैसी चतुराई एक राजनीतिक दस्तावेज के जरिये भटकाव की पैदा की गयी है, उसके देखे भटकाव से उबरने की आशा नगण्य है। राजनीति के इस दलदल मे प्रत्येक भटका हुआ आदमी खुद को रास्ते पर और दूसरेां को भटका हुआ बता रहा है। अभी जनवरी के प्रथम सप्ताह मे मीडिया से रूबरू देश के प्रधानमंत्री जी का कथन अगर ''नरेन्द्र मोदी प्रधान मंत्री बने तो देश मे तबाही मच जायेगी'' कितना विश्वसनीय है।

एक तरफ संविधान कानून के राज दुहाई दूसरी तरफ एक व्यक्ति के आने से तबाही इन दो विरोधी बातो मे सच कौन सी है। यह पक्ष प्रश्न हमारी व्यवस्था की लोकतांत्रिक प्रणाली संविधान कानून के शासन की घोषणाओं को अविश्वसनीय बना देता है, नाजुक ठहराता है। माना कि इस मुल्क मे किसी के लिये यह गुंजाइश है कि वह अपनी मर्जी की हुकुमत चला सकता हें अथवा कायम कर सकता है। यह देश 66 वर्षो से इसी मर्जी को झेल रहा है। लोकतंत्र के मुखौटे के पीछे। इसी लिये हम किसी और के लिये उसकी मर्जी का हौवा खडा कर रहे हैं मतलब यह कि न अब तक हम लोकतंत्र मे थे न आगे रहेगे । हम किसी की मर्जी झेलने के लिये ही अभिशप्त है। आपका लोक स्वराज्य आंदोलन भी कुछ ऐसी ही गवाही इे रहा है। कि हम लोकतंत्र की बजाय किसी की मजी के दास है।

उत्तरः— आपने जो लिखा है, उसमें दुनिया की वर्तमान हालत सहित भारत की वर्तमान हालत का एक सजीव चित्रण है, जो आमतौर पर साधारण नागरिक से लेकर आप विद्वान तक करतें मिल जातें हैं। किन्तु आपके इतने लम्बें लेख में न किसी एक समस्या के समाधान का मार्ग दिखा न अनेक समस्याओं के एक साथ समाधान का। आपके पत्र ने निराशा जनक अंधेरा तो बढाया है, परंतु सूर्योदय होने का कोई आभाष तक नही कराया, तो मैं आपके पत्र की क्या समीक्षा करूॅ। नरेंन्द्र मोदी— मनमोहन सिंह को अक्षम सिद्ध करने मे दिन—रात लगें हुए हैं, और मनमोहन सिंह ने पलटकर नरेंन्द्र मोदी के आने से होने वाली तबाही की भविष्यवाणी कर दी, तो इस राजनीतिक दॉव—पेंच में हम आपको क्यों उलझना चाहिए। इसलिए मैं आपके पत्र की कोई समीक्षा नही कर रहा हूॅ, किन्तु इसी अंक में प्रकाशित मेरे लेख की आप समीक्षा करेंगें तब मैं विचार—मंथन की प्रक्रिया को आगे बढाउगां।